International Journal of Enhanced Research in Educational Development (IJERED)
ISSN: 2320-8708, Vol. 10 Issue 3, May-June, 2022, Impact Factor: 7.326

भारत–इजरायल के कूटनीतिक संबंधों का आलोचनात्मक अध्ययन

डॉक्टर बी. प्रकाश[1], विजय पाल[2]

[1]विभागाध्यक्ष, राजनीतिक विज्ञान और लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ यूनिवर्सिटी, रोहतक।
[2]रिसर्च स्कॉलर, राजनीतिक विज्ञान और लोक प्रशासन विभाग, बाबा मस्तनाथ यूनिवर्सिटी, रोहतक।

सार संग्रहः

भारत और इजरायल के बीच में सकारात्मक संबंधों की शुरुआत 1991 से हुई है। 1991 से पहले भारत इजराइल को ब्रिटेन की तरह एक उपनिवेशवादी शक्ति के रूप में देखता था। दोनों देश रक्षा, कृषि और जल संचय के क्षेत्र में मिलकर काम कर रहे हैं। इस साल भारत और इजरायल अपने संबंधों की तीसवीं वर्षगांठ मना रहे हैं। इस साल इजराइल के प्रधानमंत्री नेफ्ताली बैनेट की भी भारत आने की संभावना है। इजरायल के रक्षा मंत्री भी जून के महीने में भारत की यात्रा कर चुके हैं। इस प्रकार भारत और इजरायल के संबंध मजबूत बनते जा रहे हैं। दोनों देश आतंकवाद की समस्या से ग्रसित है। इस दिशा में भी दोनों देश मिलकर कार्य कर रहे हैं। भविष्य में भी विभिन्न क्षेत्रों में अनेक समझौतों को लेकर भी भारत और इजरायल आशावादी हैं।

मुख्य शब्दः गुटनिरपेक्ष, उपकरणों, नजदीकियॉ, अस्तित्व, घृणा, उल्लंघन, संबंध, औपचारिक।

परिचयः

भारत–इजरायल कूटनीतिक संबंधों का शुरुआतः

इजरायल 14 मई 1948 को एक स्वतंत्र राष्ट्र बना जबकि भारत को आजादी 15 अगस्त 1947 को मिली। भारत इजरायल संबंधों की शुरुआत 1992 से मानी जाती है और 2017 में भारत और इजरायल ने अपने संबंधों की शुरुआत की 25 साल पूरे किए है। लेकिन 1948 से लेकर 1992 के बीच में भारत और इजरायल के बीच में अच्छे संबंध नहीं थे। इसके पीछे बहुत सारे कारण विद्यमान थे। पहला कारण तो यह था कि इंडिया अरब देशों को नाराज नहीं करना चाहता था। क्योंकि अरब देशों से इजरायल के संबंध खराब थे। बहुत सारे अरब देश ऐसे थे। जिन्हें इजराइल का अस्तित्व पसंद नहीं था। इन देशों में मिस्र, जॉर्डन, सीरिया और सऊदी अरब के नाम मुख्य रूप से लिए जाते हैं। 1960 में इजराइल की इन देशों से लड़ाई भी हुई थी। धीरे धीरे इजराइल ने फिलिस्तीन के क्षेत्र पर कब्जा करना शुरू कर दिया। वहां पर मानव अधिकारों का उल्लंघन करना शुरू कर दिया। इसलिए अरब देश इजराइल से घृणा करते हैं। दूसरा भारत के लिए अरब देश बहुत महत्वपूर्ण है।

अरब देशों को खुश करने के लिए भारत ने इजराइल से अच्छे संबंध स्थापित नहीं किएः

शशि थरूर ने अपनी पुस्तक पैक्स इंडिका जोकि 2018 में लिखी गई थी। उस पुस्तक में वे लिखते हैं कि 'अरब देशों का भारत के लिए बहुत महत्व है। इन देशों को खुश करने के लिए भारत ने इजराइल से अच्छे संबंध स्थापित नहीं किए। भारत अरब देशों से 63 प्रति ात कच्चे तेल का आयात करता है और 93 बिलियन का व्यापार भी भारत अरब देशों से करता है। भारत के बहुत सारे कर्मिक भी अरब देशों में काम करते हैं। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत के पास बहुत सारे ऐसे कारण थे जिसके कारण उसने अरब देशों से अपने संबंध खराब नहीं किए।' अरब देशों से नजदीकियों के कारण भारत ने फिलिस्तीन का समर्थन भी करना शुरू कर दिया था। भारत गुटनिरपेक्ष का भी सदस्य था और भारत सोवियत संघ से भी

अपने अच्छे संबंध बनाना चाहता था। यही कारण था कि इतने लंबे समय तक भारत और इजरायल के अच्छे संबंध बन नहीं पाए।[1] भारत का फिलिस्तीन को समर्थन करने के बावजूद इजरायल भारत से नज़दीकियां बनाना चाहता था क्योंकि इसराइल को लगा था कि भारत भविष्य में हथियारों का एक बहुत बड़ा आयात करने वाला देश बनने वाला है। इजरायल बहुत समय से सेना के उपकरणों का निर्माण कर रहा था। इसलिए फिलिस्तीन का समर्थन करने के बावजूद इजरायल भारत से आर्थिक संबंध बनाना चाहता था। लेकिन आरंभ में भारत ने अंतरराष्ट्रीय समुदाय को दिखाने के लिए इजरायल से औपचारिक संबंधों की भी शुरुआत नहीं की।

उद्देश्यः

1. भारत की इजरायल नीति को समझना।
2. भारत और इजरायल की विदे ा नीति का मूल्यांकन करना।
3. भारत की प्रतिरक्षा एवं वै िवक चुनौतियों के संदर्भ में इजरायल के महत्व को समझना।
4. भारत–इजराइल संबंधों में विकास की संभावनाओं की खोज करना।
5. वै िवक राजनीति में भारत–इजरायल के संबंधों के प्रभाव को समझना।

भारत में फिलिस्तीन दिवस मनाया गयाः

सर्वप्रथम भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की मीटिंग में 1936 में फिलिस्तीन का समर्थन किया गया था और 27 सितंबर 1936 को भारत में फिलिस्तीन दिवस मनाया गया। उसके बाद 1939 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के सम्मेलन में एक प्रस्ताव पास किया गया। उस सम्मेलन में फिलिस्तीन को शुभकामनाएं भेजी गई और यह उम्मीद की गई कि आने वाले समय में फिलिस्तीन एक स्वतंत्र राष्ट्र बनेगा। उसके बाद भारत 'यूनाइटेड नेशन स्पेशल कमेटी ऑन फिलिस्तीन' सदस्य भी बना।

भारत पहला गैर–अरब देश बना, जिसने 'फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन' को मान्यता दीः

उसके बाद 1974 में भारत ऐसा पहला गैर–अरब देश बना। जिसने 'फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन' को आं िक मान्यता दी। उसके बाद 1980 में 'फिलिस्तीन लिबरेशन ऑर्गेनाइजेशन' को पूर्ण मान्यता दी और नई दिल्ली में उसका कार्यालय भी खुलवाया। उसके बाद फिलिस्तीन के नेता यासिर अराफात 3 दिन की यात्रा पर 1980 में भारत आए। इस यात्रा के दौरान उन्होंने भारत को अपना एक आंतरिक मित्र बताया और इंदिरा गांधी को अपनी बहन भी बताया। इंदिरा गांधी ने भी फिलिस्तीन को एक पत्र लिखा था। जिसमें उन्होंने यहूदियों की आलोचना की थी। उस पत्र में उन्होंने फिलिस्तीन के लोगों पर किए जाने वाले अत्याचार और उनकी जमीन हथियाने का जिक्र किया था। इस प्रकार हम देखते हैं कि फिलिस्तीन को समर्थन करने का हमारा पुराना इतिहास रहा है। शशि थरूर ने अपनी पुस्तक पैक्स इंडिका में यह भी लिखा है कि 'जब इजराइल ने मई 1948 में अपनी स्वाधीनता घोषित की। उस समय भारत ने उसे मान्यता देने से भी इनकार कर दिया था'। भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ की महासभा में इजराइल को देश बनाने के लिए हुए मतदान के विरोध में अपना मत दिया था। लेकिन 1950 में भारत ने इजराइल को मान्यता दे दी। इस प्रकार हम देखते हैं कि भारत और इजरायल के संबंधों के इतिहास में फिलिस्तीन की बहुत बड़ी भूमिका है। भारत के लिए सबसे बड़ी नकारात्मक बात यह है कि फिलिस्तीन के पक्ष में भारत ने बढ़–चढ़कर समर्थन किया था। फिर 1992 ईस्वीं में भारत ने अपनी पुरानी मान्यताओं को छोड़ते हुए इजराइल से संबंध स्थापित करने आरंभ कर दिए। 1992 ईस्वीं में भारत के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव ने इजराइल से कूटनीतिक संबंध स्थापित कर लिए। उसके उपरांत दोनों देशों ने अपने–अपने देशों में दूतावास भी स्थापित कर लिए। भारत की नीति में अचानक आए इस बदलाव के पीछे कई कारण थे।[2] एक तो 1991 ईस्वीं में सोवियत संघ का विघटन हो गया था। सोवियत संघ के टूटने के बाद पूरे विश्व में नई भौगोलिक संबंध बनने आरंभ हो गए थे। 1991 से पहले पूरा विश्व दो गुटों में बंटा हुआ था। पूंजीवादी गुट का नेतृत्व अमेरिका कर रहा था और दूसरा साम्यवादी गुट जिसका नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। सोवियत संघ के विघटन के बाद अमेरिका पूरे विश्व की एक सर्वोच्च शक्ति बन चुका था। इन परिस्थितियों में भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव करना पड़ा। यह वह दौर था जब भारत एक आर्थिक संकट के

[1] थरूर शशि पैक्स इंडिका 2018 पृष्ठ संख्याः 121

[2] थरूर शशि पृष्ठ संख्याः 124–'पैक्स इंडिका'–2018

दौर से गुजर रहा था। उस समय हमें हमारी आर्थिक समस्याओं को दूर करने के लिए विश्व व्यापार संगठन के नियमों और शर्तों को स्वीकार करना पड़ा।

अमेरिका की इजरायल के साथ अच्छे कूटनीतिक संबंध बनाने की शर्तः

उस समय अमेरिका ने भी भारत के सामने यह शर्त रखी थी कि यदि भारत अमेरिका के साथ अच्छे संबंध बनाना चाहता है तो उसे इजरायल के साथ भी अच्छे कूटनीतिक संबंध बनाने पड़ेंगे। बाद में इसराइल से हमारे संबंध काफी फायदेमंद साबित हुए। फिर 1998 में भारत में एनडीए गठबंधन को बहुत मिलता है। उस सरकार के प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई ने इजराइल से स्थापित संबंधों को आगे ले जाने में बहुत बड़ी भूमिका निभाई। 1998 से 2004 के बीच में एनडीए की सरकार ने इजराइल से अच्छे संबंध बनाने की सभी प्रयास किए। फिर 2003 में 'एरियल शरोन' इजराइल के ऐसे पहले प्रधानमंत्री बने। जिन्होंने भारत की यात्रा की। उनकी यह यात्रा एक ऐतिहासिक यात्रा सिद्ध हुई। इजराइल ने भारत की रक्षा क्षेत्र में बहुत मदद की है। रक्षा उपकरणों को लेकर भारत और इजराइल की नीति बहुत पुरानी है। इजराइल ने भारत की अन्य क्षेत्रों में भी मदद की है।

रूस, इजरायल और फ्रांस देश ही ऐसे थे, जिन्होंने 1998 में भारत के परमाणु परीक्षण का विरोध नहीं कियाः

1998 में भारत ने पोखरण में परमाणु परीक्षण किया तो भारत को पूरी दुनिया का विरोध झेलना पड़ा। उसमें तीन देश ही ऐसे थे, जिन्होंने इस परमाणु परीक्षण का विरोध नहीं किया था। वे तीन देश थे – रूस, इजरायल और फ्रांस। इस प्रकार हम देखते हैं कि इसराइल ने 1992 के बाद भारत का कई क्षेत्रों में समर्थन करना आरंभ कर दिया था। इजराइल के राष्ट्रपति एजर विजमैन 1997 में पहली बार भारत में आए। उस समय इजराइली राष्ट्रपति ने भारत के साथ ब्राक्वीन मिसाइल नामक एक समझौते पर हस्ताक्षर किए थे। भारत और इजरायल के बीच में यह पहला समझौता था[3]।

विश्व के बदलते हुए भौगोलिक और राजनीतिक वातावरण के कारण भारत को इजराइल के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए मजबूर कर दियाः

पश्चिमी एशियाई क्षेत्र, विशेष रुप से खाड़ी क्षेत्र हमेशा से ही विश्व के लिए महत्वपूर्ण रहा है। अपनी तेल संपदा और रणनीतिक स्थिति के कारण भी क्षेत्र बहुत महत्वपूर्ण रहा है। भारत के इस क्षेत्र से राजनीतिक, आर्थिक और सांस्कृतिक संबंध प्राचीन काल से ही रहे हैं। अपनी रणनीतिक स्थिति और तेल संपदा के कारण भारत के लिए कि यह क्षेत्र बहुत ही महत्वपूर्ण रहा है। भारत के अरब लोगों के साथ अच्छे संबंध थे। भारत ने आजादी के बाद 1950 इजरायल को मान्यता नहीं दी। भारत के इजराइल के साथ 29 जनवरी 1992 तक अच्छे संबंध नहीं रहे थे। चार दशकों तक भारत और इजरायल के संबंध निष्क्रिय रहे। लेकिन विश्व के बदलते हुए भौगोलिक और राजनीतिक वातावरण के कारण भारत को 1992 में इजराइल के साथ अच्छे संबंध बनाने के लिए मजबूर कर दिया। वह घटना जिसके कारण भारत की इजरायल के साथ राजनयिक संबंध स्थापित करने के लिए मजबूर हुआ। वह घटना थी खाड़ी–युद्ध । शीत युद्ध समाप्त होने के बाद शांतिपूर्ण समाधान की सकारात्मक प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगे। भारत की इजरायल विरोधी नीति में बदलाव का पहला संकेत प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव और एक प्रमुख यहूदी नेता जोसेफ लीब्लर की नवंबर 1991 के दौरान हुई बैठक में देखने को मिला। उसके उपरांत भारत और इजराइल के मध्य वाशिंगटन में जनवरी 1992 में भारतीय दूतावास में बैठक हुई। उस बैठक का प्रतिनिधित्व भारतीय दल के उप–प्रमुख ललित मानसिंह और इजराइल के प्रतिनिधि जोसेफ अदास ने किया। उसके उपरांत 29 जनवरी 1992 को भारत ने इजरायल के साथ पूर्ण राजनीतिक संबंध स्थापित करने की घोषणा की[4]।

1991 में भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव करना पड़ाः

लेकिन जब 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया तो विश्व के परिदृश्य पर अमेरिका एक सर्वोच्च ताकत के रूप में विद्यमान हो गया। उन स्थितियों में भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव करना पड़ा।

---

[3] त्रिपाठी मंजुल रवि, भारत की विदेश नीति 'राजनयिक पर राज्यों और सरकारों की मान्यता', बी.आर. प्रकाशन सहयोग–2012।

[4] भट्ट चेतन, हिंदू राष्ट्रवाद की उत्पत्ति, विचारधाराएं औरआधुनिक मिथक, ऑक्सफोर्ड–2001

भारत की विदेश नीति का झुकाव अब अमेरिका की तरफ हो गया। भारत ने भी उदारीकरण की व्यवस्था को अपना लिया। उन परिस्थितियों में 1991 के बाद भारत के इजरायल से संबंध अच्छे होने लगे। भारत और इजरायल के बीच में जितने भी अच्छे संबंधों की शुरुआत हुई है। वे सारी शुरुआत 1991 के बाद हुई है। 1991 में हमारे देश के प्रधानमंत्री पी.वी. नरसिम्हा राव बने थे जोकि 1996 तक अपने पद पर रहे। उनके समय से ही भारत और इजरायल के संबंधों में सुधार हुआ। उसके उपरांत भारतीय जनता पार्टी की सरकार जो कि 1996, 1998 और 1999 से 2004 के बीच में रही थी। इन सरकारों के समय में भी भारत और इजरायल के संबंध मजबूत होते गए। इजराइल के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने भी भारत का दौरा किया तथा अनेक संधियों और समझौतों पर हस्ताक्षर किए। भारत ने इजरायल के साथ रक्षा के क्षेत्र में और कृषि के क्षेत्र में बहुत समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इसराइल से भारत में अनेक तकनीकों का आदान प्रदान किया। फिलिस्तीन को लेकर भारत की इजराइल को लेकर जो नीति बनी थी। वह भी अब पूर्ण रूप से बदल चुकी है। भारत के साथ–साथ इजरायल की सरकार भी भारत के साथ अच्छे संबंध बनाने में सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ती जा रही है[5]।

भारत ने इजराइल से रक्षा तकनीक मंगवाने का समझौता किया:

इजराइल से अच्छे कूटनीतिक संबंध बनने के बाद भारत ने इजराइल से रक्षा तकनीक मंगवाने का समझौता किया। 1990 के बाद भारत ने इजराइल से 'वर्ग 1' नामक मिसाइल नाम की मिसाइल खरीदी। यह मिसाइल अमेरिका में बनी 'हरपुन मिसाइल' जो कि पाकिस्तान को दी गई थी का मुकाबला करने के लिए खरीदी गई थी। कृषि के क्षेत्र में भी भारत में इजरायल की बहुत मदद ली है। इजराइल में बहुत बड़ा क्षेत्र ऐसा है जो कि कृषि के लिए बारिश पर निर्भर है और बारिश उस क्षेत्र में समय पर नहीं आती है। इस क्षेत्र के लिए इजरायल ने एक ऐसी तकनीक विकसित की है। जिसके अनुसार कम पानी में भी अच्छी खेती की जा सकती है। इस तकनीक का फायदा भारत ने भी लिया है।

भारत और इजरायल के बीच में समझौते:

इसके अलावा भी भारत और इजरायल के बीच में कुछ छोटे समझौते भी हुए हैं जैसे कि इजराइल ने भारत के सैन्य उपकरणों को अपडेट भी किया है। भारत ने इजराइल से आईएएल रडार से लैस तीन फाल्कन ए. डब्ल्यू. ए. सी. एस. खरीदे। फिर 2003 में रूसी आर–76 परिवहन विमान पर लगे उपकरण खरीदे गए। जिनकी कीमत 1 बिलियन डॉलर है। जो कमांड और समन्वय क्षमताओं में भारत की प्रारंभिक चेतावनी को बहुत बढ़ा देता है। इसके बाद सितंबर 2016 में भारत सरकार ने फाल्कन और अवाक्स की खरीद को मंजूरी दी। भारत ने चार हेरोन टी पी ड्रोन इजरायल से लीज पर लिए हैं। जिसका मूल्य 200 मिलियन डॉलर है। जो भारत में अगस्त 8 दिसंबर 2021 को आए थे। ऐसा पहली बार नहीं हो रहा है पहले भी भारत ने इजरायल से हेरोन टीपी ड्रोन लिए है । इनका प्रयोग इसराइल ने 2008–2009 में गाजा में किया था।

1992 में भारत में इजरायली दूतावास के उद्घाटन के साथ भारत–इजरायल के संबंधों की भुरुआत:

आजादी के लगभग 45 साल तक, विभिन्न कारणों से इजरायल के साथ भारत के अच्छे संबंध स्थापित नहीं हो पाए। भारत को आजादी 15 अगस्त 1947 को प्राप्त हुई जबकि इजरायल ब्रिटिश उपनिवेशवाद से मुक्त होकर 1948 में एक स्वतंत्र राष्ट्र बना[6]। यद्यपि भारत और इज़राइल के बीच ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंध अनादि काल से चले आए हैं, 1992 में भारत में इजरायली दूतावास के उद्घाटन के बाद दोनों के बीच औपचारिक रूप से राजनयिक संबंध विकसित हुए।

एनडीए सरकार बनने के बाद दोनों देशों के संबंधों में मजबूती:

लेकिन वास्तविक औपचारिक राजनयिक संबंधों की स्थापना, 1996 और 1998 में एनडीए सरकार बनने के बाद ही संभव हो सकी। इसके बाद दोनों देशों के संबंधों में मजबूती आने लगी। सरकार की दो प्रमुखों की यात्राओं के साथ ही दोनों लोकतांत्रिक राष्ट्रों के बीच संबंध और तेज हो गए। 2017 में भारत के प्रधानमंत्री

---

[5] खान जावेद अहमद, 'भारत और पश्चिम एशिया के उभरते बाजार' उदारीकरण युग। नई दिल्ली–1999

[6] पणिक्कर केएम, इन टू चाइनाज़ मेमॉयर्स ऑफ़ ए डिप्लोमैट (लंदन, 1955) पीपी. 12–13 और के.एम. पणिक्कर, अनु कृष्णमूर्ति द्वारा अनुवादित आत्मकथा (मद्रास, 1977) पृ.279.

नरेंद्र मोदी ने इजरायल और 2018 में इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतन्याहू भारत की यात्रा की। दोनों राष्ट्रों ने सांस्कृतिक आदान–प्रदान, सुरक्षा और रक्षा, आतंकवाद का मुकाबला, अंतरिक्ष अनुसंधान, जल और ऊर्जा और कृषि विकास जैसे विभिन्न क्षेत्रों में सहयोग शुरू करने का समझौता किया।

भारत इजराइल को ब्रिटेन की तरह एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में देखता था:

भारत और इजरायल के संबंध दोनों देशों की आजादी के समय से ही उतार–चढ़ाव वाले रहे हैं। शुरुआत में भारत इजराइल को मान्यता देने में भी कतरा रहा था। क्योंकि भारत इजराइल को ब्रिटेन की तरह एक साम्राज्यवादी शक्ति के रूप में देखता था। जिस प्रकार ब्रिटेन ने भारत को अपना उपनिवेश बनाया था। उसी प्रकार इजराइल भी फिलिस्तीन को अपने कब्जे में ले रहा था। यरूशलम को भी अपने नियंत्रण में लेना इजराइल की इसी नीति को दर्शाता है। इसी प्रकार वे अरब देश जिनसे इजराइल की लड़ाई चल रही थी। इन देशों को भी भारत नाराज नहीं करना चाहता था। क्योंकि कच्चे तेल और प्राकृतिक गैस जैसे संसाधनों के लिए भारत सबसे ज्यादा इन्हीं देशों पर निर्भर है। इसलिए इसराइल से अपने अच्छे संबंध स्थापित करके भारत इन देशों को नाराज नहीं करना चाहता था।

1991 में सोवियत संघ का विघटन के बाद विश्व का परिदृश्य:

1991 में विश्व का राजनीतिक परिदृश्य पूरी तरह बदल गया। क्योंकि 1991 से पहले पूरा विश्व दो गुटों में बैठा हुआ था पूंजीवादी गुट जिसका नेतृत्व अमेरिका कर रहा था और साम्यवादी गुट जिसका नेतृत्व सोवियत संघ कर रहा था। इसी प्रकार एशिया और अफ्रीका के वह देश जोकि साम्राज्यवाद के चंगुल से आजाद हुए थे। वे गुटनिरपेक्षता का समर्थन कर रहे थे। भारत गुटनिरपेक्ष आंदोलन का सहजन्मदाता होते हुए भी सोवियत संघ का समर्थन करता था। अमेरिका की पूंजीवादी विचारधारा को लेकर उदासीन होने के कारण भी भारत इजराइल से अच्छे संबंध नहीं बना पाया। क्योंकि इजरायल और अमेरिका के संबंध घनिष्ठ थे। लेकिन जब 1991 में सोवियत संघ का विघटन हो गया तो विश्व के परिदृश्य पर अमेरिका एक सर्वोच्च ताकत के रूप में विद्यमान हो गया। उन स्थितियों में भारत को अपनी विदेश नीति में बदलाव करना पड़ा। भारत की विदेश नीति का झुकाव अब अमेरिका की तरफ हो गया। भारत ने भी उदारीकरण की व्यवस्था को अपना लिया। उन परिस्थितियों में 1991 के बाद भारत के इजरायल से संबंध अच्छे होने लगे। भारत और इजरायल के बीच में जितने भी अच्छे संबंधों की शुरुआत हुई है वे सारी शुरुआत 1991 के बाद हुई है।

1991 के बाद की सरकारों की भूमिका:

1991 में हमारे देश के प्रधानमंत्री पीवी नरसिम्हा राव बने थे जोकि 1996 तक अपने पद पर रहे। उनके समय से ही भारत और इजरायल के संबंधों में सुधार हुआ। उसके उपरांत भारतीय जनता पार्टी की सरकार जो कि 1996, 1998 और 1999 से 2004 के बीच में रही थी। इन सरकारों के समय में भी भारत और इजरायल के संबंध मजबूत होते गए। इजराइल के प्रधानमंत्री और राष्ट्रपति ने भी भारत का दौरा किया तथा अनेक संधियों और समझौतों पर हस्ताक्षर किए। भारत ने इजरायल के साथ रक्षा के क्षेत्र में और कृषि के क्षेत्र में बहुत समझौतों पर हस्ताक्षर किए। इसराइल से भारत में अनेक तकनीकों का आदान प्रदान किया। फिलिस्तीन को लेकर भारत की इजराइल को लेकर जो नीति बनी थी। वह भी अब पूर्ण रूप से बदल चुकी है। भारत के साथ–साथ इजरायल की सरकार भी भारत के साथ अच्छे संबंध बनाने में सकारात्मक दिशा में आगे बढ़ती जा रही है[7]। इजराइल ने अपनी स्वतंत्रता की घोषणा मई 1948 में कर दी थी। 1950 तक भारत ने इजरायल को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता नहीं दी था। इसके साथ ही इजराइल को संयुक्त राष्ट्र संघ की सदस्यता देने के भी भारत के खिलाफ था। इसके पीछे कई कारण थे। एक तो भारत का 1947 में विभाजन हुआ था। इस कारण भारत की मुस्लिम समाज इजराइल को मान्यता देने का गलत मतलब निकाल सकता था। भारत ने इजराइल को 17 सितंबर 1950 को एक स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता दी। हालांकि 1949 में भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ में इजराइल के विरुद्ध मतदान किया था। 1950 में मान्यता देने के बावजूद भारत ने इजराइल से कूटनीतिक संबंध नहीं स्थापित किए। हालांकि कुछ क्षेत्रों में भारत और इजरायल ने सहयोग करना शुरू कर दिया था। हमारे अच्छे कूटनीतिक संबंध इजराइल

[7] खान जावेद अहमद, 'भारत और पश्चिम एशिया के उभरते बाजार' उदारीकरण युग। नई दिल्ली–1999

से 1992 में स्थापित हुए। इससे पहले संबंध स्थापित ना होने का कारण फिलिस्तीन था। इस क्षेत्र को लेकर भारत इजराइल से कूटनीतिक संबंध बनाने में पीछे हटता रहा।

इजरायली प्रधानमंत्री इस साल (2022) भारत आ सकते हैं:

इजरायली प्रधानमंत्री इस साल भारत आ सकते हैं इजरायल के प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट और कुछ अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस साल भारत की यात्रा पर आ सकते हैं। यह जानकारी भारत में इजरायली राजदूत नाओर गिलोन ने सोमवार को दी। उन्होंने कहा कि दोनों देश 30 साल के राजनयिक संबंधों का जश्न मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि साल भर चलने वाले समारोहों को रफ्तार देने के लिए विशेष लोगो लाया जा रहा है।

हरियाणा सरकार और इजरायल के बीच में जल सहयोग को लेकर समझौता:

हरियाणा सरकार और इजरायल के बीच में जल सहयोग को लेकर समझौता हुआ है। राज्य सरकार और इजरायल ने एक संयुक्त समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। जिसके अनुसार यह समझौता जल प्रबंधन एकीकरण और क्षमता निर्माण के क्षेत्र में काम करेगा। सतबीर एस. कादियान, इंजीनियर–इन–मुख्य–सह–परियोजना निदेशक अटल भुजल योजना, हरियाणा ने कहा कि समझौते पर हस्ताक्षर इनायत शेलिन, विदेश मंत्रालय इजरायल के साथ, किया गया है। कादियान ने कहा इज़राइल और हरियाणा सरकार जल क्षेत्र के स्थानांतरण के विषय में काम करेंगे[8]।

पानी को लेकर हरियाणा का इजरायल से देश का पहला समझौता:

पानी को लेकर हरियाणा ने इसरायल से देश का पहला समझौता किया है। इजरायल की टीम जल्द ही हरियाणा का दौरा करेगी। इजराइल तकनीक से सेम वाले गांव में पानी को पीने योग्य बनाए जाएगा । इससे डार्क जोन वाले 85 ब्लॉकों में भूजल स्तर में सुधार आ जाएगा । प्रदेश में 9 लाख हेक्टेयर जमीन सेम ग्रस्त हैं और 85 ब्लॉक डार्क जोन में आ चुके हैं। हरियाणा में इजरायल की तकनीक से सेम और कम पानी की समस्या का समाधान किया जाएगा। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के दौरे के बाद इजरायल अब कृषि और पानी को लेकर भारत के साथ काम करेगा। इजराइल अपनी तकनीक भारत को देगा, इसके लिए हरियाणा ने सबसे पहले इजरायल से समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। इजराइल की तकनीक से प्रदेश में पानी की समस्या का समाधान किया जाएगा। इसमें वह 9 लाख हेक्टेयर जमीन है, जिस में जलभराव की समस्या से पैदा हुई है और सेम के कारण खेती भी नहीं होती है। वहां 85 ब्लॉक में भूजल स्तर नीचे जाने से पानी की कमी हो गई है। सिंचाई विभाग के इंजीनियर इन चीफ एवं वाटर रिसोर्स अथॉरिटी के सीईओ एस.एस. कादियान ने बताया कि अगले 15 दिनों में इजरायल के विशेषज्ञ हरियाणा में दौरा करेंगे और 3 माह में काम शुरू हो जाएगा। प्रदेश में जिस क्षेत्र में सेम की समस्या है, वहां के पानी को इजरायल की तकनीक से पीने योग्य बना कर वही के गांव में सप्लाई किया जाएगा। जिससे लोगों को पेयजल मिलेगा, वही सेम की समस्या खत्म होने से खेती भी होगी। इजरायल 140 देशों में मदद करता है, उस बजट का वह 10: भारत में खर्च करेगा। खास बात यह है कि उसके पास सीनियर स्तर के 6 विशेषज्ञ हैं, जिनमें दो भारत में रहकर मदद करेंगे। एक–एक गांव की रिपोर्ट तैयार होगी और उसी के अनुसार प्लानिंग की जाएगी। सीईओ के अनुसार अब तक अथॉरिटी यह रिपोर्ट तैयार कर चुकी है कि किस गांव में सेम की समस्या है और किस में भूजल स्तर नीचे जाने से पेयजल की भी दिक्कत है। इसलिए अब पूरा काम एक एक गांव की प्लानिंग बनाकर किया जाएगा। उनका कहना है कि 1980 तक किसान का सिर्फ 5 प्रति ात कर्ज सिंचाई पर होता था, लेकिन अब यह 35 प्रति ात पर पहुंच गया है। इजरायल तकनीक से जहां कृषि का क्षेत्र बढ़ेगा, वही किसान का खर्च घटेगा। इस बार मॉनसून में बारिश का 25 प्रति ात पानी इस्तेमाल किया जाएगा। प्रदेश में अब सेम की समस्या को लेकर ड्रेन का भी सहारा लिया जाएगा। जिन ड्रेन में बारिश के वक्त पानी भरता है, उसे अब उसके साथ लगती नहरों में भर कर खेतों तक सप्लाई किया जाएगा। अभी मॉनसून में सिर्फ 10 प्रति ात पानी का ही इस्तेमाल किया जाता है। इस बार 25 प्रति ात तक इस्तेमाल का लक्ष्य रखा गया है। धीरे–धीरे इसे 100 तक ले जाया जाएगा[9]।

---

[8] द ट्रिब्यून, हरियाणा,16 जून 2022, पृष्ठ संख्या– 6।

[9] दैनिक भास्कर, हरियाणा, रोहतक, शुक्रवार 17 जून 2022, पृष्ठ संख्या –2

हरियाणा अब इजराइल मॉडल पर जल को बचाएगाः

रोहतक सहित प्रदेश के शहरों में सीवर से निकले गंदे पानी को साफ कर उसके 100ः इस्तेमाल की तैयारी है। इसके लिए 11 दिन में 132 घंटे की ट्रेनिंग लेकर प्रदेश के सिंचाई विभाग के इंजीनियर इन चीफ डॉक्टर सतबीर सिंह कादियान सहित तीन अधिकारी हाल ही में इजराइल प्रवास से लौटे हैं। जो मुख्यमंत्री मनोहर लाल के इस ड्रीम प्रोजेक्ट के तहत रिपोर्ट सरकार को सौंपेंगे। ताकि प्रदेश में पायलट प्रोजेक्ट शुरू किया जा सके। भविष्य की चुनौतियों और जरूरतों को देखते हुए सर्वाधिक फोकस भूमिगत जल स्तर बढ़ाने, अंडर ग्राउंड जलघर टैंक बनाने और नॉन रेवेन्यू वाटर का अनुपात कम करने पर रहेगी। इसके लिए हाई सिक्योरिटी वाटर टेक्नोलॉजी इस्तेमाल की जाएगी। सस्टेनेबल मैनेजमेंट ऑफ वाटर अर्बन एरियाज प्रोजेक्ट के तहत हरियाणा, हिमाचल प्रदेश, राजस्थान, उड़ीसा, असम, मेघालय और दिल्ली के सेंट्रल वाटर कमीशन (सीडब्ल्यूसी) आदि से 20 इंजीनियरों की टीम गत 7 मई 2022 को एक साथ इसराइल गई थी। इसमें रोहतक से जेएलएन के एक्सईएन अरुण मुंजाल और गुड़गांव से सिंचाई विभाग के एससी शिव सिंह रावत भी शामिल रहे। उन्होंने 8 मई 2022 से वहां पर वाटर सप्लाई और सीवर से निकले गंदे पानी को शोधित कर उसके दोबारा कृषि और बागवानी आदि में इस्तेमाल के तरीके और प्रभावी माइक्रो इरीगेशन आदी पर 18 मई 2022 तक प्रशिक्षण लिया। इससे संबंधित प्रोजेक्ट की ग्राउंड रिपोर्ट तैयार की गई है। साथ ही आयोजित सेमिनार के दौरान हरियाणा में उनकी संभावनाओं को लेकर इजराइल के विशेषज्ञों से विचार विमर्श किया गया। इजराइल में जरूरत का मात्र 4ः पानी का स्त्रोत है। इसलिए स्काडा तकनीक से ड्रिंकिंग वाटर का मॉनिटरिंग सिस्टम कंट्रोल रूप से संचालित होता है। अंडर ग्राउंड वाटर टैंक बने है। यहां शिविर को वाटर रिसोर्स का दर्जा प्राप्त है। पहले वाली से निकले पानी को शोधित कर कृत्रिम झील में स्टोर करके सिंचाई में इस्तेमाल किया जाता है। वर्षा जल व नहरी पानी को विस्तार किया जाता है। इजराइल ने समुद्री जल से एक लाख 11,000 एकड़ फिट प्रतिवर्ष आर ओ वाटर बनाया है। यह प्रोजेक्ट हडेरा में लगा है। जिसमें 90 मिनट में 20000 मीटर क्यूब प्रति घंटे पीने लायक पानी तैयार होता है। हवा से भी पानी बनता है। यहां हाई टेक्निक के इस्तेमाल से नान रिवेन्यू वाटर मात्र 5 प्रति ात है। जबकि भारत में यह 40 प्रति ात है। इजराइल के शेरोन मेला को टर्न कचरे के डंपिंग यार्ड के ऊपर मिट्टी डालकर पार्क विकसित कर दिया है। खास बात यह है कि सीवर के शोधक पानी से ही इस पार्क के पेड़ पौधो की सिंचाई की जाती है। इस पार्क के चारों ओर बहुमंजिला इमारतें बनाई जा रही हैं। हरियाणा में भी इसी आइडिया पर कचरे के निपटान के प्रोजेक्ट शुरू किए जाएंगे। इजराइल प्रवास में भविष्य की जरूरतों को देखते हुए कम पानी का किफायती इस्तेमाल करने की तकनीक से की गई है। जेएलएन नहर के एक्सईएन अरुण मुंजाल ने कहा की अति शीघ्र रिपोर्ट सरकार को भेज दी जाएगी। ताकि आगे की प्रक्रिया शुरू हो सके[10]।

इस्राइल में भारतीय छात्रों को शरण देने वाला क्रिकेट क्लबः

17 मई 2021 को दक्षिण पूर्व इज़राइली शहर 'बेर्शेबा' में एक क्रिकेट क्लब 'नेगेव' क्षेत्र में 'बेन–गुरियन' विश्वविद्यालय के कई भारतीय शोधकर्ताओं के बचाव में आया है, क्योंकि वे इस दौरान उचित आश्रय के लिए संघर्ष कर रहे थे। पिछले एक सप्ताह में क्षेत्र में शत्रुता में वृद्धि हुई है। बेर्शेबा क्रिकेट क्लब की इमारत और विश्वविद्यालय के करीब एक दो मंजिला संरचना, जो वास्तव में एक भूमिगत मंजिल के साथ एक आश्रय गृह है, ने फिलिस्तीनी आतंकवादियों द्वारा लॉन्च किए गए रॉकेट इजरायल के दक्षिणी क्षेत्रों पर गिरने के तुरंत बाद स्थानीय निवासियों के लिए अपने दरवाजे खोल दिए। क्लब ने विश्वविद्यालय में भारतीय शोधकर्ताओं की ओर इशारा किया जो सुरक्षा की तलाश में थे। कुछ भारतीय शोधकर्ता क्रिकेट क्लब के लिए भी खेलते हैं और हमारे परिवार के हिस्से की तरह हैं। लेकिन हमने उन्हें बताया कि सुरक्षित आश्रय की तलाश में किसी का भी स्वागत है। हमारी सुविधा का उपयोग करने के लिए, बेर्शेबा क्रिकेट क्लब के अध्यक्ष नाओर गुडकर ने कहा। उन्होंने कहा कि 'पिछले सप्ताह के दौरान कई भारतीय शोधकर्ता हमारे साथ रह रहे हैं, दोनों लड़के और लड़कियां, और हमने उन्हें हर संभव मदद देते हुए चीजों को यथासंभव आरामदायक बनाने की कोशिश की है'। उनमें से कुछ सुरक्षा नियमों से पूरी तरह अवगत नहीं हैं और मैंने और मेरे सहयोगियों ने उन्हें सुरक्षित रखने के लिए बरती जाने वाली सभी सावधानियों से अवगत कराने का प्रयास किया है। क्लब में शरण लेने वाले भारतीय डॉक्टरेट और पोस्ट–डॉक्टोरल फेलो ने उदारता के लिए अपनी कृतज्ञता व्यक्त की। क्लब ने न केवल भारतीय छात्रों को सुरक्षित महसूस कराया

[10] दैनिक भास्कर, रोहतक, मंगलवार, 24 मई 2022, पृष्ठ संख्या–4

है, बल्कि एक तरह से उन्हें लाड़–प्यार भी किया है। उनके पास स्नैक्स, चाय और कॉफी तक पहुंचाई गई है। वे जिम और मनोरंजन प्रणाली का उपयोग कर सकते हैं। यह हमें विचलित करने में मदद करता है। यह बात, "डॉक्टरेट छात्र अंकित चौहान ने कहीं[11]।

श्रीनगर में भी इजरायल विरोधी प्रदर्शन किया गया। गिरफ्तार किए गए 17 लोगों को छोड़ दिया गयाः

15 मई 2021 को श्रीनगर में पुलिस ने एक कलाकार समेत 17 युवाओं को जेल से मुक्त कर दिया। यह लोग कोविड–19 लोक डाउन के समय में इजरायल विरोधी प्रदर्शन कर रहे थे। एक आर्टिस्ट जिसका नाम 'मुजाहिद गुल' है। उसने फिलिस्तीन के समर्थन में कुछ पेंटिंग बनाई थी। इसके विरूद्ध कार्रवाई करते हुए पुलिस ने आर्टिस्ट सहित 20 लोगों को शनिवार 15 मई 2021 को 'पढ़शाही बाग' क्षेत्र जो कि श्रीनगर में पड़ता है से गिरफ्तार कर लिया गया। जिनमें से 17 बच्चों की काउंसलिंग करने के बाद उन्हें उनके परिवार के हवाले कर दिया गया। यह सब डीएम एक्ट की सेक्शन 51 का उल्लंघन कर रहे थे जो कि लोक डाउन के समय में लगाई गई थी। यह सब पुलिस अधिकारियों ने बताया। पुलिस अधिकारियों का कहना है कि यह परिवारों की भी नैतिक जिम्मेदारी है कि वे अपने बच्चों को गलत रास्ते पर जाने से रोके। 32 वर्षीय कलाकार मुदासिर गुल ने एक पेंटिंग बनाई है जिसमें एक फिलिस्तीनी महिला रो रही है और उसका चेहरा फिलिस्तीनी झंडे से ढका हुआ है। उस पेंटिंग के ऊपर लिखा हुआ है कि हम फिलिस्तीनी हैं। उस आर्टिस्ट को 16 मई 2021 रविवार की शाम को छोड़ दिया गया ऐसा उसके भाई समीउल्लाह रेदर ने बताया। गुल की माता ने बताया स्थानीय युवा उनके घर पर आए थे और उन्होंने कहा था कि इस तरह की पेंटिंग को बनाओ। उन्होंने कहा की गुल ने पेंटिंग बनाने से मना कर दिया था। लेकिन युवाओं ने कहा कि पेंटिंग बनाकर एक तरह से हम फिलिस्तीनी लोगों के विरुद्ध प्रदर्शन करेंगे और अपनी सहानुभूति दिखाएंगे। पुलिस ने शनिवार 15 मई 2021 को गुल को गिरफ्तार किया और 16 मई शाम को उसे छोड़ दिया। पीडीपी कि नेता महबूबा मुफ्ती और हुर्रियत कांफ्रेंस के नेता मीरवाइज उमर फारूक ने इस घटना की आलोचना की। पीडीपी अध्यक्षा महबूबा मुफ्ती ने इस गिरफ्तारी की आलोचना की। जोकि इजराइल और मध्य पूर्व के बीच में लोक डाउन के समय में संघर्ष को लेकर की गई थी। उन्होंने कहा कि पूरे विश्व के लोग विरोध कर रहे हैं। लेकिन भारत में कश्मीर में विरोध करना गुनाह है। जहां पर एक आर्टिस्ट को पीएसए के तहत गिरफ्तार कर लिया जाता है[12]।

इजरायल– फिलीस्तीन विवाद का हल निकलना अभी मुश्किल, इजरायल ने हमास की 15 किमी लंबी सरंग तबाह की, भारत ने कहा– हिंसा जल्द बंद होः

इजरायल और फिलिस्तीनी संगठन 'हमास' के बीच पिछले 9 दिन से जंग जारी है। सोमवार को 'इजरायल डिफेंस फोर्स' ने दावा किया है कि उसने 'हमास' की 15 किमी लंबी सुरंग को तबाह कर दिया है। इजरायल और हमास के बीच जारी जंग में अब तक 200 से ज्यादा लोगों की मौत हो गई है। इसमें 58 से ज्यादा बच्चे भी शामिल हैं। वहीं, इजरायल–फिलीस्तीन मुद्दे पर संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की बैठक में कोई नतीजा नहीं निकलने के बाद इजरायल ने गाजा पर हमले तेज कर दिए हैं। वहीं इन हमलों को लेकर अंतरराष्ट्रीय बिरादरी से मिली–जुली प्रतिक्रिया मिल रही है। जबकि संयुक्त राष्ट्र में भारत ने इस संघर्ष की निंदा की। साथ ही कहा है कि 'हिंसा जल्द से जल्द बंद होनी चाहिए'। ज्यादातर पक्ष इस मामले का शांतिपूर्ण समाधान चाहते हैं। हमास के उप–नेता 'मौसा अबू मरजौक' ने कहा है कि 'अगर कोई समझौता होगा तो हमारी शर्तों के साथ होगा, न कि इजरायल की शर्तों के साथ। अगर इजरायल रुकना नहीं चाहता है, तो हम भी नहीं रुकेंगे'। अमेरिका, कतर, मिस्र और अन्य देशों ने भी संघर्ष विराम की कोशिशों में लगे हैं, लेकिन चीन ने अमेरिका पर आरोप लगाकर विवाद पैदा कर दिया है। चीन ने कहा है कि 'अमेरिका, संयुक्त–राष्ट्र को काम नहीं करने दे रहा। वह रोड़े अटका रहा है'। 'चीन के विदेश मंत्री वांग यी' ने कहा है कि उन्हें इसका बात का बहुत खेद है कि अमेरिका संयुक्त राष्ट्र को इस हिंसा के खिलाफ खुलकर नहीं बोलने दे रहा है। हम अमेरिका से अपील करते हैं वह अपनी जिम्मेदारियां निभाए। 9 दिन में कुल 34 हजार फिलिस्तीनी गाजा पट्टी से पलायन कर चुके हैं। सैकड़ों बड़ी इमारतें जमींदोज हो चुकी हैं।

[11] द ट्रिब्यून गुरुग्राम मंगलवार 18 मई 2021

[12] द ट्रिब्यून गुरुग्राम मंगलवार 18 मई 2021

हमास–इजरायल संघर्श पर भारत की धीमी प्रतिक्रियाः

हमास–इजरायल संघर्श पर भारतीय की प्रतिक्रिया धीमी रही है। फ़िलिस्तीनी उद्देश्य के समर्थन के इतिहास के साथ, 1992 से इज़राइल के साथ एक बहु–आयामी मजबूत, समृद्ध संबंध, यह जनादेश है। जबकि इजरायल की केंद्रीयता असंदिग्ध है, भारत बड़े मुद्दों पर स्वायत्त है। यह संयुक्त राष्ट्र में भारत के राजदुत टीएस तिरुमूर्ति की प्रतिक्रिया में प्रतिध्वनित हुआ है कि 'सभी संघर्षों और हिंसा पर गहरी चिंता, हमास के रॉकेट हमलों और टेम्पल माउंट पर हिंसा के विशेष संदर्भ के साथ; शेख जर्राह में बेदखली पर चिंता; यथास्थिति बनाए रखने पर जोर; संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद के प्रस्ताव 2334 का पालन, जो इजरायल की बस्तियों को कलंकित करता है, उन्हें प्रमुख उल्लंघन कहता है; और टू–स्टेट सॉल्यूशन के प्रति प्रतिबद्धता'।

जबकि भारत ने संयुक्त राष्ट्र में हमास पर अपना हाथ रखा है, इसके रॉकेट हमलों का वर्तमान विशिष्ट संदर्भ भी इस तथ्य के कारण है कि हमास ने युद्ध के कार्य के रूप में हिंसा की शुरुआत की थी तथा इस क्षेत्र के लिए ऐतिहासिक भारतीय प्रतिबद्धता में 1956 से 1967 तक संयुक्त राष्ट्र मिशन, यूएनईएफ में एक बड़ी उपस्थिति भी शामिल थी। इस मिशन में भारतीय सेना के शानदार कमांडर जनरल पीएस ज्ञानी और इंद्रजीत सिहं थे। जबकि मिशन को बड़े पैमाने पर गाजा में तैनात किया गया था, भारतीयों की इस क्षेत्र में स्वागत योग्य उपस्थिति थी, क्योंकि वे आज भी संयुक्त राष्ट्र मिशन यूनिफिल, लेबनान में हैं। यह भी उल्लेख करता है कि फिलिस्तीनियों को भारत का समर्थन अटूट रहा है और 2018 के बाद से, उनके लिए भारतीय योगदान चौगुना प्रति वर्ष 5 मिलियन डालर हो गया है।[13]

भारत और इजरायल के बीच रक्षा संबंधः

इजराइल कैसे कृषि, साइबर सुरक्षा और अन्य क्षेत्र में भारत की मदद कर सकता है। भारत और इजरायल अपनी खुफिया एजेंसियों मोसाद और रा के बीच में खुफिया जानकारी साझा करते हैं।

भारत और इज़राइल स्पाइक एंटी टैंक और गाइडेड मिसाइल के लिए एक समझौते पर हस्ताक्षर करने के करीब हैं। जिसकी अनुमानित लागत 3200 करोड़ रुपये है।

मोसाद और रॉः

जब रिसर्च एंड एनालिसिस विंग (रॉ) की स्थापना रामेश्वर नाथ काओ द्वारा सितंबर 1968 की गई थी। उस समय तत्कालीन प्रधान मंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें सलाह दी थी कि उन्हें इजराइल की खुफिया एजेंसी मोसाद के साथ संबंध विकसित करने चाहिए। यह पाकिस्तान और चीन के बीच सैन्य संबंधों के प्रतिवाद के रूप में सुझाया गया था। इजराइल भी इस बात को लेकर चिंतित था कि पाकिस्तानी सेना के अधिकारी लीबियाई और ईरानियों को सेन्य प्रशिक्षण दे रहे थे [14]।

पेगासस जासूसी सॉफ्टवेयरः

राहुल गांधी के पेगासस जासूसी पर नए खुलासे से देश की राजनीति फिर गरमा गई है। न्यूयॉर्क टाइम्स अखबार ने अपनी इनवेस्टिगेशन रिपोर्ट के आधार पर दावा किया है कि 'भारत सरकार ने 2017 में इजरायल से लगभग 15,000 करोड़ रुपए की रक्षा डील के तहत जासूसी सॉफ्टवेयर पेगासस खरीदा था। इस रक्षा डील में कुछ मिसाइलों की खरीद भी की गई थी'[15]। आरोप है कि भारत में लगभग 40 पत्रकार, विपक्ष के बड़े नेताओं, कुछ केंद्रीय मंत्रियों, सुरक्षा एजेंसियों के पूर्व और वर्तमान प्रमुखों, कुछ विजनेसमैन सहित लगभग 300 भारतीयों के फोन हैक किए गए थे। न्यूयॉर्क टाइम्स ने अपनी रिपोर्ट में तथ्यों के साथ भारत और इजरायल के बीच में पेगासस डील का सिलसिलेवार फिलीस्तीनी मानवाधिकारों की टीम के खुलासे का दावा किया है।

नफ्ताली बेनेट प्रधानमंत्री पद के लिए नामितः

---

[13] 'द हिन्दु', बुधवार 21 मई 2021 पृष्ठ संख्या– 7

[14] राजन एम.एस., भारत की विदेश नीति पर अध्ययन। नई दिल्ली–1999

[15] न्यूयॉर्क टाइम्स पहली दोस्ती का बड़ा असरः जून 2019

दो साल में चार अनिर्णीत चुनावों के बाद विपक्ष के प्रमुख 'यायर लापिड' के लिए गठबंधन बनाने का आदेश बुधवार 30 मई 2021 को समाप्त हो रहा है। इज़राइल की संसद ने संसद सदस्यों को नई सरकार पर वोट करने के लिए बुलाया हैं। जोकि नेतन्याहू के शासन को समाप्त कर देगा। इजरायल के प्रधान मंत्री बेंजामिन नेतन्याहू का 12 साल तक सत्ता पर काबिज रहने का रिकॉर्ड हैं। नेतन्याहू, अपनी पीढ़ी के सबसे प्रमुख इजरायली राजनेता, 23 मार्च 2021 के चुनाव के बाद सरकार बनाने में विफल रहे थे, दो साल में चौथे, एक हाई टेक करोड़पति, नफ्ताली बेनेट, उन्हें एक नई सरकार के प्रमुख के रूप में बदलने के लिए तैयार थे। असंभावित सहयोगी जिनमें वामपंथी, मध्यमार्गी और अरब विधायक शामिल हैं, जिन्हें उन्होंने विपक्षी नेता यायर लैपिड के साथ मिलकर बनाया था। संसद ने विश्वास मत में सरकार को मंजूरी देने के लिए बुलाया। जो भाषणों और एक बहस का पालन करेगा। जिसमें लगभग चार घंटे लग सकते हैं। 49 वर्षीय बेनेट, एक रूढ़िवादी यहूदी, पूर्व टीवी प्रस्तोता 'लैपिड' के पदभार ग्रहण करने से पहले दो साल के लिए प्रमुख के रूप में काम करेगा। रविवार को यरुशलम में इजरायल की संसद केसेट में नफ्ताली बेनेट प्रधानमंत्री पद के लिए नामित किए गए है । बेनेट ने ईरान परमाणु समझौते से लड़ने का संकल्प लिया। इजराइल के नामित पीएम नफ्ताली बेनेट ने कहा कि ईरान के साथ अंतरराष्ट्रीय परमाणु समझौते को नवीनीकृत करना एक गलती होगी, संसद में भाषण में बेनेट ने कहा कि इजरायल तैयार है और इज़राइल की ओर से उपलब्धि भरी सेवा, बेनेट ने सत्र की शुरुआत में एक भाषण में कहा। सरकार, जिसमें पहली बार ऐसा दल शामिल है जो– ईरान के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए। बेनेट ने कहा, इजरायल ईरान को परमाणु हथियारों से लैस नहीं होने देगा। बेंजामिन नेतन्याहू द्वारा टकराव की नीति को बनाए रखती हैं। 12 साल के प्रीमियर के बाद, नेतन्याहू ने पो पर लौटने की कसम खाई शक्ति–साझाकरण समझौता 49 वर्षीय नेफ्टल बेनेट ने सेंट्रिस्ट नेता यायर लैपिड के साथ एक शक्ति समझौता किया है, जो यश एटिड पार्टी ही है, जिसे बाद में 54 बेर 2023 में प्रीमियरशिप पर ले जाया गया, लैपिड के अंत तक ति वर्षों तक सेवा की, ओन्डहार्गेस्ट के नेता 17 . के साथ गुट इंट केसे नेतनी के साथ पार्टी में आगे बढ़ने के बाद रेउव ने कोल्ट बनाया इजराइल के 21 प्रतिशत अरब अल्पसंख्यकों को भेजता है, मुख्य रूप से फिलीस्तीनियों की ओर नीति जैसे हॉट–बटन अंतरराष्ट्रीय मुद्दों पर व्यापक कदमों से बचने और परिवर्तन द्वारा घरेलू पर ध्यान केंद्रित करने की योजना बना रहा है। सुधार इजरायल के साथ डीलॉन्ग संघर्ष को हल करने वाले प्रगति वार्डों की कोई संभावना नहीं होने के कारण, कई फिलीस्तीनियों को नया रूप दिया जाएगा।[16]

भारत के साथ काम करने को उत्सुक बेनेटः

जेरूसलम, जून 14 2021 इजराइल के नवनिर्वाचित प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट ने सोमवार को कहा कि वह अपने भारतीय समकक्ष नरेंद्र मोदी के साथ काम करने के लिए उत्सुक हैं ताकि दोनों लोकतंत्रों के बीच अद्वितीय और मधुर संबंधों को और विकसित किया जा सके। दक्षिणपंथी यामिना पार्टी के 49 वर्षीय नेता बेनेट, जो रविवार जून 13 2021 को बेंजामिन नेतन्याहू की सत्ता पर 12 साल की पकड़ को समाप्त करने वाले नए प्रमुख बने, ने प्रधानमंत्री मोदी के बधाई ट्वीट का जवाब देते हुए यह बात कही। प्रधान मंत्री मोदी ने पहले बेनेट को इजरायल के नए प्रधान मंत्री के रूप में शपथ लेने पर बधाई दी, और कहा कि वह उनसे मिलने और दोनों देशों के बीच रणनीतिक साझेदारी को गहरा करने के लिए उत्सुक हैं। क्योंकि वे अगले साल राजनयिक संबंधों के उन्नयन के 30 साल का जश्न मनाते हैं। 'धन्यवाद श्रीमान प्रधान मंत्री , मैं हमारे दो लोकतंत्रों के बीच अद्वितीय और मधुर संबंधों को और विकसित करने के लिए आपके साथ काम करने के लिए तत्पर हूं'–नफ्ताली बेनेट।मोदी ने नए इजराइल प्रीमियर को बधाई दीं। भारतीय पीएम नरेंद्र मोदी ने इजरायल के नए पीएम नफ्ताली बेनेट के साथ–साथ पिछले पदाधिकारी, बेंजामिन नेतन्याहू को बधाई दी है, जिन्होंने एक अकेले वोट से अपनी कुर्सी गंवा दी थी। मोदी ने नेतन्याहू को टैग करते हुए ट्वीट किया, 'जैसे ही आप इज़राइल के प्रधान मंत्री के रूप में अपना सफल कार्यकाल पूरा कर रहे हैं, मैं आपके नेतृत्व और भारत इज़राइल रणनीतिक साझेदार जहाज पर व्यक्तिगत ध्यान देने के लिए अपने समर्थक का आभार व्यक्त करता हूं'। टीएनएस सीज़, बेनेट ने अपने आधिकारिक हैंडल से ट्वीट किया।वैकल्पिक प्रधान मंत्री और विदेश मंत्री यायर लापिड ने भी कहा कि 'इज़राइल की नई सरकार भारत के साथ रणनीतिक संबंधों को आगे बढ़ाने के लिए काम करेगी'।[17]

[16] द ट्रिब्यून, गुरुग्राम, विश्व, सोमवार, 14 जून 2021, पृष्ठ संख्या–10

[17] द ट्रिब्यून, विश्व, गुरुग्राम, मंगलवार, 15 जून 2021, पृष्ठ संख्या–10।

भारत–इजरायल संबंधों पर ज्यादा असर नहीं होगाः

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बेंजामिन नेतन्याहू के नधुर संबंध रहे हैं। पिछले कुछ समय से दोनों देशों के बीच सामरिक रणनीतिक साझेदारी भी बढ़ी है। जानकारों के मुताबिक इजरायल में सत्ता में बदलाव से भारत के साथ संबंधों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। प्रधानमंत्री बैनेट से भी नेतन्याहू की विदेश नीति का पालने करने की ही उम्मीद है। नेतन्याहू के पूर्व सहयोगी रह चुके हैं नेफ्टाली बैनेट नए प्रधानमंत्री नेफ्टाली बैनेट का बेंजामिन नेतन्याहू से रिश्ता पुराना है। वे नेतन्याहू के सहयोगी रह चुके हैं। हालांकि नेफ्टाली बैनेट, नेतन्याहू की तुलना में अधिक कट्टरपंथी माने जाते हैं। वे स्पष्ट तौर पर फिलीस्तीन राज्य की विचारधारा को ही स्वीकार नहीं करते । नेफ्टाली कई 'सॉफ्टवेयर कंपनियों' के मालिक रह चुके हैं। उनकी पार्टी ने इसी साल मार्च में हुए चुनाव में केवल सात सीटें जीती थीं। हालांकि इसके बाद भी वे पिछले काफी समय से नेतन्याहू को सत्ता से हटाने के लिए मुहिम चला रहे थे। लेकिन गाजा संघर्ष ने उनकी मुहिम को बल दिया[18]।

यहूदी–विरोधी की कमी के लिए इजरायल के दूत ने भारत की प्रशंसा की, दोनों दे ा संबंधों की 30वीं वर्षगांठ पर लोगो लॉन्च करेंः

इजरायल के राजदूत नाओर सिलोन ने सोमवार, 14 जून 2021 को भारत की प्रशंसा की, जिसमें एंटी–एमिलियम या नफरत की अनुपस्थिति के लिए भारत में कोई धर्म–विरोधी नहीं है, वाक्यांश मौजूद नहीं है, सिलोन ने कहा, संयुक्त रूप से इजरायल में भारत के राजदूत के साथ लॉन्च करते हुए दोनों देशों के बीच राजनयिक संबंधों की स्थापना की 30 वीं वर्षगांठ को चिह्नित करने के लिए स्मारक और लोगा लॉन्च करें। यहूदी लोग सदियों से भारत में पनपे हैं और संस्कृति को समृद्ध किया है। सिलोन ने सहमति व्यक्त करते हुए कहा कि पिछले पांच वर्षों में संबंध गुणात्मक रूप से उच्च प्रक्षेपवक्र पर चले गए हैं। इजरायल के राजदूत नाओर सिलोन ने यह भी आशा व्यक्त की कि आने वाले महीनों में नए प्रधान मंत्री नफ्ताली बेनेट भारत का दौरा करेंगे। मोदी सरकार ने पश्चिम एशिया में एक आर्थिक क्वाड भी शुरू किया है। जिसमें इज़राइल, संयुक्त अरब अमीरात और अमेरिका शामिल हैं। पिछले इज़राइली पीएम बेंजामिन नेतन्याहू के कार्यकाल के दौरान संबंधों को उच्च स्तर पर ले जाने के अलावा भारत में इज़राइल के राजदूत नाओर गिलोन और इज़राइल में भारत के राजदूत संजीव सिंह ने दोनों देशों के बीच संबंधों की स्थापना की 30वीं वर्षगांठ को चिह्नित करने के लिए एक स्मारक लोगो लॉन्च किया। लोगो में डेविड और अशोक चक्र का सितारा है और यह अंक 30 बनाता है। जो द्विपक्षीय संबंधों की 30 वीं वर्षगांठ को दर्शाता है। लोगो मजबूत दोस्ती और प्यार का प्रतीक है। यह दोनों पक्षों के बीच बढ़ती रणनीतिक साझेदारी को भी दर्शाता है। दोनों देशों ने पिछले साल इजरायल और भारत के प्रमुख डिजाइन कॉलेजों के छात्रों के लिए एक लोगो डिजाइन कॉन्टेस्ट शुरू किया था। डिजाइन कॉन्टेस्ट के विजेता वाराणसी के नेशन अल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन के निखिल कुमार राय द्वारा यह लोगो बनाया गया था।[19]

भारत, इज़राइल ने रक्षा सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा कीः

भारत और इज़राइल ने आज गुरुवार, 2 जून 2022 भविष्य की प्रौद्योगिकियों और रक्षा सह–उत्पादन में अनुसंधान और विकास पर ध्यान देने के साथ सभी क्षेत्रों में सहयोग बढ़ाने के तरीकों पर चर्चा की। दोनों पक्षों ने आज यहां भारतीय पक्ष का नेतृत्व कर रहे रक्षा मंत्री राजनाथ सिंह और दूसरे पक्ष के रक्षा मंत्री बेंजामिन गैंट्ज़ के साथ द्विपक्षीय बैठक की। द्विपक्षीय, क्षेत्रीय, रक्षा और औद्योगिक सहयोग से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की गई। रक्षा अनुसंधान और विकास संगठन (डीआरडीओ) और इजरायल के रक्षा अनुसंधान एवं विकास निदेशालय के बीच एक सहयोग समझौते पर भी चर्चा हुई। यह दोनों देशों के बीच तकनीकी सहयोग के विस्तार को सक्षम करेगा। मंत्रियों ने दोनों देशों के बीच रक्षा सहयोग को और विकसित करने के अपने इरादे की घोषणा की जोकि भारत के असाधारण विकास और उत्पादन क्षमताओं के साथ–साथ इजरायल की तकनीकी प्रगति और परिचालन अनुभव का उपयोग करता है। यूएवी पर ध्यान देने के साथ–साथ सरकार से प्रौद्योगिकियों के ढांचे, सैन्य प्रशिक्षण ढांचे, सैन्य प्रशिक्षण और तकनीकी सहयोग के भीतर भागीदारी रक्षात्मक क्षमताओं पर भी चर्चा की गई। दोनों पक्षों ने रक्षा सहयोग पर भारत–इजरायल

[18] दैनिक भास्कर, देश–विदेश, रोहतक, मंगलवार, 15 जून 2021, पृष्ठ संख्या– 6

[19] द ट्रिब्यून, गुरुग्राम, विश्व, 25 जनवरी 2022, पृष्ठ संख्या– 15।

के दृष्टिकोण को अपनाया। फ्यूचरिस्टिक डिफेंस के क्षेत्र में सहयोग बढ़ाने पर आशय पत्र का भी आदान–प्रदान किया गया। मंत्रियों ने मौजूदा सैन्य गतिविधियों की समीक्षा की।[20]

इजरायल–भारत के साथ संबंधों की 29वीं वर्षगांठ पर धमाका, दिल्ली में इजरायली दूतावास के पास विस्फोटः

दिल्ली में इजरायली दूतावास के पास 29 जनवरी 2021 को विस्फोट हुआ है। इजरायल ने इसे आतंकी हमला बताया है। भारत में हाईअलर्ट की घोशणा कर दी गई है।[21]

इजरायल संसद ने नेफ्टाली बैनेट को नया पीएम चुनाः

संसद ने नेफ्टाली बैनेट को नया पीएम चुना इजरायल की संसद 'नेसेट' ने नया नेता चुन लिया है। नेफ्टाली बैनेट अब देश के अगले पीएम होंगे। लगातार 12 साल तक पीएम रहे बेंजामिन नेतन्याहू को रविवार को सत्ता से बेदखल होना पड़ा। अब वे विपक्ष में बैठेंगे क्योंकि वह संसद में बहुमत साबित नहीं कर सके। 8 दलों की नई गठबंधन सरकार में शामिल 'येश एटिड' पार्टी के नेता 'मिक्की लेवी' को संसद का नया अध्यक्ष चुना है। लेवी को 120 सदस्यीय संसद 67 सदस्यों ने समर्थन किया। रिपोर्ट्स के अनुसार, नई सरकार की पुष्टि के लिए संसद सत्र शुरू होने पर नामित पीएम नेफ्टाली बैनेट से धक्का–मुक्की भी हुई[22]।

भारत–इजरायल संबंधों पर ज्यादा असर नहीं होगाः

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और बेंजामिन नेतन्याहू के मधुर संबंध रहे हैं। पिछले कुछ समय से दोनों देशों के बीच सामरिक रणनीतिक साझेदारी भी बढ़ी है। जानकारों के मुताबिक इजरायल में सत्ता में बदलाव से भारत के साथ संबंधों पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। प्रधानमंत्री बैनेट से भी नेतन्याहू की विदेश नीति का पालने करने की ही उम्मीद है। नेतन्याहू के पूर्व सहयोगी रह चुके हैं नेफ्टाली बैनेट नए प्रधानमंत्री नेफ्टाली बैनेट का बेंजामिन नेतन्याहू से रिश्ता पुराना है। वे नेतन्याहू के सहयोगी रह चुके हैं। हालांकि नेफ्टाली बैनेट, नेतन्याहू की तुलना में अधिक कट्टरपंथी माने जाते हैं। वे स्पष्ट तौर पर फिलीस्तीन राज्य की विचारधारा को ही स्वीकार नहीं करते । नेफ्टाली कई 'सॉफ्टवेयर कंपनियों' के मालिक रह चुके हैं। उनकी पार्टी ने इसी साल मार्च में हुए चुनाव में केवल सात सीटें जीती थीं। हालांकि इसके बाद भी वे पिछले काफी समय से नेतन्याहू को सत्ता से हटाने के लिए मुहिम चला रहे थे। लेकिन गाजा संघर्ष ने उनकी मुहिम को बल दिया[23]।

इजराइल और भारत की स्थिति अलगः भूपेंद्र सिंह हुड्डा

हरियाणा के भूतपूर्व मुख्यमंत्री भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा है, 'कि वे किसी भी चीज का विरोध के लिए विरोध नहीं करते, बल्कि वह खुद सैनिक स्कूल के विद्यार्थी होने के नाते आये सैनिक हैं'। इसलिए वह सेना की कार्यप्रणाली को समझते हैं। भारतीय सेना का नाम पूरी दुनिया में सम्मान के साथ लिया जाता है। लेकिन केंद्र सरकार इजराइल का उदाहरण देकर देश पर अग्निपथ योजना को थोपना चाहती है। जबकि इजराइल और भारत की स्थिति अलग है। इजराइल जैसे छोटे देशों में बेरोजगारी नहीं है और वहां के लोगों को जबरदस्ती फौज में भेजा जाता है। जबकि सेना में भर्ती होना हमारे देश के युवाओं का सपना होता है और देश का युवा सैनिक बनकर खुद को गौरवान्वित महसूस करता है। भूपेंद्र सिंह हुड्डा ने कहा कि 'भारत की सीमा के एक तरफ पाकिस्तान और एक तरफ चीन जैसा देश बैठा है। ऐसे में देश की सुरक्षा के साथ इस तरह का प्रयोग करना खतरनाक साबित होगा।[24]

---

[20] द ट्रिब्यून, गुरुग्राम, शुक्रवार, 3 जून 2022।

[21] अमर उजाला, विदेश, 30 जनवरी 2021

[22] दैनिक भास्कर, रोहतक, देश–विदेश, 14 जून 2021, सोमवार।

[23] दैनिक जागरण, देश–विदेश, रोहतक, मंगलवार, 15 जून 2021, पृष्ठ संख्या– 6

[24] दैनिक भास्कर, रोहतक, मंगलवार, 28 जून 2022, पृष्ठ संख्या–4

निष्कर्षः

इस प्रकार हम कह सकते है कि भारत इजरायल संबंधों की भविश्य में अनेक अच्छी संभावनाएं हैं। यदि दोनों देश मिलकर काम करे तो आंतकवाद के खिलाफ एक बहुत अच्छा अभियान आरम्भ कर सकते हैं। आज के परिवेश में भारत की विदेश नीति से इजरायल बहुत प्रभावित है। भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और इजरायल के प्रधानमंत्री बेंजामिन नेतान्याहू के प्रयासों के माध्यम से दोनों देशों के बीच में बहुत अच्छे संबंधों की भाुरुआत हुई है। इस प्रकार हम देखते हैं कि भविश्य में दोनों देश मित्रता के नए आयाम स्थापित करेंगें।भारत–इजरायल संबंध हमारे देश की आर्थिक उन्नति में सहायक है। सैन्य दृश्टि से भी भारत की ताकत मजबूत होगी। अंतर्राश्ट्रीय स्तर पर भी आंतकवाद के विरुद्ध लड़ने में भारत की ताकत बढ़ेगी। कृशि के क्षेत्र में भी इजरायल के सहयोग का फायदा हमारी अर्थव्यवस्था को होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूचीः

1. वेल भाल्व (2009) 'इंडिया की यहूदी विरासतः अनुश्ठान, कला और जीवन चक्र'
   प्रकाश कः मार्ग प्रका ान, मुंबई।
2. ओरपा स्लैमक (2009) 'भारत के यहूदी'
   प्रकाश कः इजरायल संग्रहालय यरू शलेम।
3. राहिल डेलिया बेनिम (2015) 'फार इंडियाज लार्जेस्ट जैविस कम्यूनिटी, वन मुस्लिम मैक्स ऑल द टॉमस्टोन'।
4. कॉटेज नाथन (2000) 'हु आर द न्यूज ऑफ इंडिया'?
   प्रकाश कः कैलिफोर्निया यूनिवर्सिटी प्रेस
5. व्हेल भाल्व (2004) 'लॉस्ट इजरायली फ्रॉम नॉर्थ ईस्ट इंडिया'

पत्रिकांए एवं समाचार पत्रः

1. प्रतियोगिता दर्पण
2. प्रतियोगिता साहित्य
3. कम्पिटी ान सक्सेस रिव्यू
4. मनोरमा
5. दैनिक भास्कर
6. दैनिक जागरण
7. द ट्रिब्यून
8. टाइम्स ऑफ इंडिया
9. हिंदूस्तान टाइम्स
10. द हिंदू
11. द इंडियन एक्सप्रैस
12. पंजाब केसरी
13. हरिभूमि

इजरायली प्रधानमंत्री इस साल 2022 में भारत आ सकते हैंः

इजरायल के प्रधानमंत्री नफ्ताली बेनेट और कुछ अन्य वरिष्ठ अधिकारी इस साल भारत की यात्रा पर आ सकते हैं। यह जानकारी भारत में इजरायली राजदूत नाओर गिलोन ने सोमवार को दी। उन्होंने कहा कि दोनों देश 30 साल के राजनयिक संबंधों का जश्न मना रहे हैं। उन्होंने कहा कि साल भर चलने वाले समारोहों को रफ्तार देने के लिए विशेष लोगो लाया जा रहा है[25]।

[25] राजन एम.एस., भारत की विदेश नीति पर अध्ययन। नई दिल्ली–1999